M.A III-SEMESTER cc-9 01

66

अर्धमागधी आगम साहित्य

इकाई - आचारांग - प्रथम अध्ययन

Q.1 उत्तराध्ययन के प्रथम आधार पर जैन साधुओं के प्रारंभिक विनय का निरूपण करें

Ans- उत्तराध्ययन के प्रथम अध्ययन में अंगार भिक्षुओं के विनय का निरूपण किया गया है विनय की परीभाषा करते हुए यह कहा गया है कि जो शिष्य गुरु की आज्ञा का पालन करने वाला है, उसके समीप बैठने वाला है। उनके मनोभावों को समझकर तदनुसार आचरण करने वाला है। उसे विनीत कहते हैं इसलिए के विपरीत आचरण करने वाला अविनीत कहलाता है जिस प्रकार सड़े हुए कानों वाली कुतिया हर स्थान से निकाल दी जाती है। उसी प्रकार कुशील और दुराग्य शिष्य भी निकाला जाता है।

गुरु के समीप जब दिक्षीत साधु को शान्त भाव से बैठना चाहिए। उसे असबंध नहीं करनी चाहिए। उसे दुष्ट व्यवहार नहीं करना चाहिए भूल से यदि कोई दुष्ट व्यवहार हो गया तो उसे गुरु से नहीं छिपाना चाहिए बिना पूछे हुए शिष्य को उस सुरक्षित घोड़े के समान होना चाहिए जो कोड़े को देखते हुए चाल पकड़ लेता है, बिना पूछे हुए शिष्य को गुरु समक्ष नहीं बोलना चाहिए, और पूछे जाने पर कोई झूठी बातें नहीं करना चाहिए। यदि किसी कारण से गुरु कुपित हो जाए तो अपने आचरण से उनकी क्रोध

को शान्त करे और गुरु के प्रिय एवं अप्रिय व्यवहार को समान रूप मानता हुआ संयम पूर्वक रहे, मन अथवा कर्म के द्वारा कभी गुरु के समक्ष अथवा परोक्ष में गुरु के प्रतिकूल आचरण नहीं करना चाहिए, गुरु से बहुत सटकर नहीं बैठना चाहिए। जब आचार्य पुकारे तो चुप नहीं रहना चाहिए, शिष्य को तत्क्षण गुरु के समीप उपस्थित होना चाहिए जब गुरु शिष्य से बातें करे तो उसे आसन से उठकर बातें करना चाहिए जब कुछ पूछना हो तो आसन पर या शैया पर बैठे हुए नहीं पूछना चाहिए गुरु के पास आकर घुटना टेककर बैठना चाहिए और हाथ जोड़कर प्रश्न पूछना चाहिए।

यदि गुरु कोई दण्ड दे तो उसे हितकर समझना चाहिए यदि उसके प्रति द्वेष नहीं करना चाहिए नव दीक्षित भिक्षुक को समय मिलाने के लिए निकल जाना चाहिए, उसे ऐसे स्थानों पर नहीं रहना चाहिए जहाँ भोज भण्डार आदि हो रहा हो भिक्षाटन के समय उसे गृहस्थ के अत्यन्त समीप नहीं जाना चाहिए और उससे बहुत दूर रहना चाहिए। द्वार और गवाक्ष छतियों से उसे गृहस्थ के अपेक्षा बहुत ऊँचाई पर नहीं रहना चाहिए और नीचे ही उतरना चाहिए भोजन के संबंध में अच्छा बना है, स्वराब मीठा या स्वादिष्ट है इस तरह का कोई टीका टिप्पणी नहीं करना चाहिए जिस शिष्य के सद्‌व्यवहार से गुरु प्रसन्न होते हैं वे शिष्य श्रुत सम्पन्न को प्राप्त करता है।

साधु जीवन का मूल आधार है संयम अतः नव दीक्षित साधु को सर्वदा अपने मन वचन और कर्म को नियंत्रित रखना चाहिए अपने मन तथा इन्द्रियों को वश में करना एक मात्र इहलौकिक और परलौकिक सुखों का हेतु है। सूत्र में कहा गया है।